कोर-1. SEM-I — प्रो॰ जगनारायण राम
6207877227

हिन्दी साहित्य का इतिहास (इकाई-1)

आदिकाल : इतिहास और साहित्य

(प्रश्न-1) हिन्दी साहित्य के काल विभाजन का संक्षिप्त परिचय देते हुए काल विभाजन का औचित्य प्रतिपादित कीजिए।

अथवा

हिन्दी साहित्य के इतिहास का उपयुक्त काल-विभाजन कीजिए।

अथवा

हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन तथा नामकरण पर प्रकाश डालिए।

अथवा

विभिन्न प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन पर औचित्य की दृष्टि से प्रकाश डालिए।

उत्तर- विश्व भर के साहित्य का अध्ययन कुछ काल खण्डों में बाँट कर किया जाता है। समग्र वस्तु में यदि अधिक विस्तार और व्यापकता हो तो उसे टुकड़ों में बाँटकर सम्पूर्ण इकाई के सन्दर्भ में विश्लेषित करना सुगम होता है। यह विभाजन अनेक दृष्टिकोणों से किया जाता है। कुछ विद्वान साहित्य की सतत् प्रवाहशील धारा का अध्ययन ऐतिहासिक काल-क्रम की काल खण्डों के आधार पर ही कर लेते हैं। प्राय: साहित्य का इतिहास लिखने वाले साहित्य की प्रकृति और प्रवृत्ति के आधार पर काल-विभाजन करते हैं। प्रत्येक साहित्य के भीतर अनेक प्रवृत्तियों की अन्तर्धारायें होती हैं। इन प्रवृत्तियों के उतार-चढ़ाव, रीति आदर्श, राजनीतिक स्थितियाँ, जीवन की समता-विषमता के आधार पर सम्पूर्ण साहित्य को विभाजित करके उसके अध्ययन का प्रयास किया जाता है।

जैसा कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं

चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य - परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है। यहाँ यह स्मरणीय है कि हमारे हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत करते समय सर्वप्रथम प्रश्न काल-विभाजन का ही उठता है क्योंकि कई सौ वर्षों के साहित्यिक इतिहास को उपयुक्त काल खंडों में विभाजित करने के पश्चात् ही उसका मूल्यांकन करना चाहिए।

हम यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना उचित समझते हैं कि कुछ समीक्षक हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन को ही अनुपयुक्त समझते हैं, पर यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो काल-विभाजन से हानि की अपेक्षा लाभ ही अधिक है। सच तो यह है कि काल-विभाजन न केवल इतिहास का अध्ययन सुगम कर देता है अपितु विभिन्न परिस्थितियों के ज्ञान द्वारा हमें काल विशेष की विशेषताएँ भी ज्ञात हो जाती हैं। साथ ही काल-विभाजन संबंधी त्रुटियाँ भी यथा संभव दूर की जा सकती हैं और काल-विभाजन का अभिप्राय यह नहीं है कि एक काल में एक ही प्रकार की रचनायें हुईं अन्य प्रकार की नहीं बल्कि इससे हमें यही अर्थ ग्रहण करना चाहिए कि एक काल में एक विषय पर ही अधिक रचनायें हुईं। उदाहरणार्थ भक्ति काल में अन्य विषयों पर भी रचना होते हुए भक्ति साहित्य की अधिकता रही, अतः उसे भक्तिकाल ही कहा जाता है। इस प्रकार काल-विभाजन विषय विशेष पर की गई रचनाओं का द्योतक है और हिन्दी साहित्य के इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन तभी संभव है जबकि उसका काल विभाजन करते हुए काल क्रमानुसार उसकी प्रगति पर विचार किया जाए।

साहित्य के इतिहास में युग-चेतना और साहित्य चेतना दोनों का समान योग रहता है। अतः साहित्य का काल विभाजन करते समय ऐतिहासिक

काल क्रम और साहित्य विधा दोनों आधारों को ग्रहण करना समीचीन है। हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले प्रारंभिक विद्वानों गार्सा द तॉसी तथा शिव सिंह सेंगर ने काल-विभाजन और नामकरण की ओर ध्यान नहीं दिया। इसके पश्चात नामकरण का प्रयास किया गया और उनकी पूर्वापर काल सीमाएँ भी स्पष्टत: देने का कार्य प्रारंभ हुआ जो निम्नलिखित रूप में है :—

(क) जार्ज ग्रियर्सन - जार्ज ग्रियर्सन ने अत्यधिक ढंग से हिन्दी साहित्य के इतिहास को काल क्रम में विभाजित करने और उसे नाम देने का प्रयास किया। ग्रियर्सन ने अपने 'मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' नामक साहित्यिक इतिहास में चारण काल, पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण, जायसी की प्रेम कविता, ब्रज का कृष्ण-सम्प्रदाय, मुगल दरबार, तुलसीदास के अन्य परवर्ती कवि, अठारहवीं शताब्दी, कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान, विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान आदि शीर्षकों से हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण करने का प्रयास मात्र किया था। किन्तु यह स्पष्ट है कि ये सब अध्यायों के शीर्षक मात्र हैं; काल विभाजन नहीं हैं। इनमें काल क्रम की निरन्तरता का बोध नहीं होता।

(ख) मिश्र बन्धुओं द्वारा हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन :— मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्रबंधु विनोद' नामक साहित्य के इतिहास ग्रन्थ में काल-विभाजन और उनके नामकरण की दिशा में सुविचारित प्रयास किया। यद्यपि उसमें अनेक त्रुटियाँ और असंगतियाँ हैं फिर भी मिश्रबंधुओं ने पथ प्रदर्शक का कार्य किया है। जिसका विकास आगे चलकर होता रहा है। मिश्रबंधुओं ने हिन्दी साहित्य का

काल-विभाजन और नामकरण इस प्रकार किया है :—

(i) आरंभिक काल (क) पूर्वारम्भिक काल (700 से 1343 वि० सं० तक)
(ख) उत्तरारम्भिक काल (1344 से 1444 वि० सं० तक)

(ii) माध्यमिक काल - (क) पूर्व माध्यमिक काल (1445 से 1560 वि० सं० तक)
(ख) प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561 से 1680 वि० सं० तक)

(iii) अलंकृत काल (क) पूर्वालंकृत काल (1681 से 1790 वि० सं० तक)
(ख) उत्तरालंकृत काल (1791 से 1889 वि० सं० तक)

(iv) परिवर्तन काल (1890 वि० सं० तक)

(v) वर्तमान काल (1926 वि० सं० से आज तक)

(vi) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का काल विभाजन :- वस्तुतः काल विभाजन की दृष्टि से सबसे उल्लेखनीय और सार्थक प्रयास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ही किया है और उनका कहना है कि 'हिन्दी-साहित्य' का विवेचन करने में यह बात ध्यान में रखनी होगी कि किसी विशेष समय में लोगों में रुचि विशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ? उपर्युक्त व्यवस्था के अनुसार ~~हम~~ हम हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभक्त कर सकते हैं :—

(i) आदिकाल (वीरगाथा काल, सं० = 1050 - 1375 तक)
(ii) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल, सं० = 1375 - 1700 तक)
(iii) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल, सं० 1700 - 1900 तक)
(iv) आधुनिक काल (गद्यकाल, सं० 1900 से अब तक)

शुक्ल जी ने आधुनिक काल का उप-विभाजन भी किया -
प्रथम उत्थान यानि भारतेन्दु काल
द्वितीय उत्थान यानि द्विवेदी काल
तृतीय उत्थान को कोई दूसरा वैकल्पिक नाम नहीं दे पाये।

(ख) डॉ० रामकुमार वर्मा का काल विभाजन :- डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपने "हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास" में काल विभाजन एवं नामकरण इस प्रकार किया है :-

(i) संधि काल (750 वि० सं० से 1000 वि० सं० तक)
(ii) चारण काल (1000 वि० सं० से 1375 वि० सं० तक)
(iii) भक्ति काल (1375 वि० सं० से 1700 वि० सं० तक)
(iv) रीतिकाल (1700 वि० सं० से 1900 वि० सं० तक)
(v) आधुनिक काल (1900 वि० सं० से अद्यतन)

इससे स्पष्ट है कि संधिकाल के अतिरिक्त शुक्ल जी के काल विभाजन और नामकरणों को ज्यों का त्यों स्वीकार किया गया है।

(ङ) डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त का काल विभाजन - डॉ० गुप्त ने अपने 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में मध्यकाल को कुछ परंपराओं में बाँटकर काल-विभाजन एवं नामकरण के प्रयास को नई दिशा दी है -

(i) धर्माश्रय में लिखित साहित्य - संत काव्य परंपरा, पौराणिक रीति परम्परा, पौराणिक प्रबन्ध काव्य परंपरा, भक्ति काव्य परम्परा।

(ii) राज्याश्रय में लिखित साहित्य - मैथिली गीत परंपरा, ऐतिहासिक रासो काव्य परम्परा, ऐतिहासिक चरित काव्य परंपरा, ऐतिहासिक मुक्तक काव्य परंपरा, शास्त्रीय मुक्तक काव्य परंपरा।

(iii) लोकाश्रय में लिखित साहित्य - रोमांसिक कथा काव्य परंपरा, स्वच्छन्द प्रेम काव्य परंपरा।

(च) डॉ० नगेन्द्र द्वारा सम्पादित इतिहास के अनुसार - डॉ० नगेन्द्र ने हिन्दी साहित्य के इतिहास का सम्पादन किया है। इस ग्रन्थ में डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त ने आचार्य रामचन्द्र

शुक्ल द्वारा प्रवर्तित काल-विभाजन और नामकरण को स्वीकार करते हुए कुछ संशोधन-परिवर्तन किये हैं। यह विभाजन और नामकरण शुक्ल जी द्वारा प्रतिपादित और बहुजन्य मान्य है। इसे हिन्दी साहित्य का आधारभूत और स्वीकृत तथा प्रचलित रूप मानकर स्वीकार किया जा सकता है :-

आदिकाल - ई० सन्वीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक।

भक्तिकाल - ई० चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक।

रीतिकाल - ई० सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक।

आधुनिक काल - ई० उन्नीसवीं शती के मध्य से अब तक।

(i) पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल) - 1857 ई० से 1900 ई० तक

(ii) जागरण सुधार काल - (द्विवेदी काल) 1900 ई० से 1918 ई० तक

(iii) छायावाद काल - 1918 ई० से 1938 ई० तक।

(iv) छायावादोत्तर काल - 1938 ई० से 1953 ई० तक :-

(क) प्रगति प्रयोग काल - 1938 ई० से 1953 ई० तक

(ख) नवलेखन काल - 1953 ई० से अब तक।

निष्कर्षतः हम इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि मानव सभ्यता के विकास के साथ निरन्तर प्रवाहमान तथा विकसित होने वाले साहित्य को परखने के लिए भी भाषा विशेष के साहित्य को कुछ काल खण्डों में विभक्त किया जाता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास को समझने के लिए कुछ निश्चित आधारों पर शुक्ल जी द्वारा किये गए काल विभाजन और नामकरण को हम स्वीकार करते हैं। यद्यपि इसकी पूर्ण वैज्ञानिकता के बारे में स्वयं शुक्ल जी को भी शंका थी। वे लिखते हैं- यद्यपि इन कालों की रचनाओं की प्रवृत्ति के अनुसार ही इनका नामकरण किया गया है पर यह नहीं समझना चाहिए कि किसी विशेष काल में अन्य प्रकार की रचनाएँ होती ही नहीं थी। जैसे भक्तिकाल या रीतिकाल को लें तो उसमें वीर रस के अनेक काव्य मिलेंगे जिनमें वीर साहसी राजाओं की प्रशंसा उसी ढंग की होगी जिस ढंग की वीरगाथा काल में भी हुआ करती थी। -(6)- x - x -